भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक– साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ३३

सोमवार १९ मई, '६९

अन्य पृष्ठों पर

बिहार की राजधानी...
—कृष्णराज मेहता ४१०

नया नारा —सम्पादकीय ४११

शांति-सेना-सम्बन्धी विचारणीय मुद्दे ४१२

चार अधिवेशन और उनकी उपलब्धियाँ —कपिल अवस्थी ४१५

परिशिष्ट
"गाँव की बात"

मृत्यु के समय जो विचार चित्त में गहरा पैठ जाय, वही दूसरे जन्म में जोरदार सिद्ध होता है। वही पूँजी लेकर जीव आगे की यात्रा के लिए निकलता है।

—विनोबा

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी–१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

www.vinoba.in

धार्मिक चोगे उतारने होंगे

जिनके हाथ में पाकिस्तान का भाग्य है, उन सभी पाकिस्तानवासियों को मैं एक मित्र और हितेच्छु के नाते कहूँगा कि अगर उनका ईमान जाग्रत नहीं हुआ और उन्होंने अपनी भूलों को स्वीकार नहीं किया, तो वे पाकिस्तान को स्थायी बनाने में निष्फल होंगे।

इसका अर्थ यह नहीं कि मैं (दोनों देशों के) स्वेच्छया पुनर्मिलन को नापसंद करता हूँ। लेकिन मैं इस विचार का विरोध करूँगा कि हथियारों के बल से पाकिस्तान को भारत के साथ मिलाया जाय। मुझे आशा है कि मेरे इस कथन को बेसुरा आलाप मानने की गलतफहमी न की जाय, खासकर इस वक्त, जब मैं सचमुच मृत्युशय्या पर पड़ा हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि सभी पाकिस्तानी यह महसूस करें कि अपनी कमजोरी के कारण या उनकी भावनाओं को चोट न पहुँचे, इस भय के कारण जिसे मैं ईमानदारी से ठीक मानता हूँ, अगर उसे उनको न कहूँ तो मैं अपने प्रति असत्याचरण करूँगा।[1]

हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न के विषय में मेरा एक ही उद्देश्य है कि इसका समुचित समाधान तभी होगा, जब भारत या पाकिस्तान में लघुमति अपने-आप को सुरक्षित माने, भले ही वह लघुमति एक ही व्यक्ति की क्यों न हो। कहीं भी न तो किसी कौम को विशेषाधिकार होगा और न कोई दलित वर्ग होगा। सभी को अपने-अपने धार्मिक चोगे उतार देने होंगे।[2]

हर मुसलमान को भारत से और हर हिन्दू व सिक्ख को पाकिस्तान से खदेड़ देना इस देश के लिए युद्ध व सर्वनाश का आवाहन करना है। यदि दोनों राज्यों में ऐसी आत्मघातक नीति का अनुसरण किया गया, तो पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में इसलाम व हिन्दू-धर्म के लिए वह विनाश का कारण होगी। अच्छाई से ही अच्छाई पैदा होती है। प्रेम-से-प्रेम उत्पन्न होता है। रही बदले की बात, सो मनुष्य की इसी में शोभा है कि (दंड के लिए) वह कुकर्मी को प्रभु के हाथों में सौंप दे। इसके अतिरिक्त मुझे और किसी मार्ग की जानकारी नहीं।[3]

मैं इस बात का प्रतिपादन नहीं करता कि भारत की सरकार पाकिस्तान में हिन्दुओं व सिक्खों पर हो रहे दुर्व्यवहार की ओर ध्यान न दे, उनकी रक्षा के लिए उन्हें भरसक सभी प्रयत्न करने होंगे। परन्तु निःसंदेह इसका यह उत्तर नहीं कि वे पाकिस्तान के कुख्यात तरीकों की नकल करें और मुसलमानों को खदेड़ दें। हाँ, जो स्वेच्छा से पाकिस्तान जाना चाहें, उन्हें सीमा तक सुरक्षित पहुँचा दिया जाय।[4]

मो. गांधी

हरिजन—(१) २५-१-'४८; (२) १४-९-'४७; (३) २८-९-'४७; (४) ५-१०-'४७

बिहार की राजधानीवाले पटना जिले का आधा भाग ग्रामदान में शामिल

"आगे हम फिर समय नहीं माँगेंगे, और ३१ मई तक पटना जिलादान अवश्य पूरा करेंगे," यह आश्वासन देते हुए समाहर्ता श्री श्रीवास्तव ने बाबा से कहा कि श्री विद्यासागरजी के साथ मिलकर हमने शेष प्रखण्डों को ग्रामदान में लाने की कार्यकारी योजना बनायी है।

३० अप्रैल को गांधी स्मारक संग्रहालय में विनोबाजी के निवास-स्थान पर पटना जिले के कार्यकर्ताओं की बैठक में श्री विद्यासागर भाई ने कहा कि हमें खेद है कि हम अपने वादे के अनुसार अपना जिलादान समर्पण नहीं कर सके। परन्तु पटना जिले का सबसे बड़ा अनुमंडल बिहारशरीफ अनुमंडलदान पू० बाबा को समर्पित कर रहा हूँ, जिसमें १. राजगीर, २. अस्थावाँ, ३. नूरसराय, ४. हिलसा, ५. चण्डी, ६. इस्लामपुर, ७. एकंगरसराय, ८. गिरियक, ९. बिहार और १०. रहुई प्रखण्ड आते हैं। इन प्रखण्डों के कुल ८८२ गाँवों में से ग्रामदान में शामिल गाँवों की संख्या ७०५, कुल जनसंख्या ९,१३,८६८ में से ग्रामदान में शामिल जनसंख्या ७,२९,५२६, कुल रकबा—५,११,५३७ एकड़ में से ग्रामदान में शामिल रकबा २,७२,०५० एकड़ ४२ डिसिमल है।

बाढ़ और दानापुर प्रखण्ड भी वहाँ के एस० डी० ओ०, कार्यकर्ताओं और शिक्षकों ने मिलकर प्राप्त किये थे, वे, भी समर्पित हुए, जिसका ब्यौरा निम्न प्रकार है :

बाढ़ प्रखण्ड में :	कुल गाँव	८८	दान में शामिल गाँव ८८
२३ पंचायत	कुल जनसंख्या	९७,९८४	दान में शामिल जनसंख्या ७३,३६६
	कुल रकबा	४९,८७४ एकड़	दान में शामिल रकबा २६,४०३एकड़
दानापुर प्रखण्ड :	कुल गाँव	५१	दान में शामिल गाँव ५१
१५ पंचायत	कुल जनसंख्या	५७,०४९	दान में शामिल संख्या ४८,७७६

हरनोत प्रखंड के कार्यकर्ताओं ने बताया कि वह भी प्रखंडदान हो गया है, परन्तु उसके कागज यहाँ नहीं पहुँचे हैं, वे ५-७ दिन में संकलित कर भेज देंगे। बाढ़ अनुमंडल का सरमेरा प्रखंड तो पहले ही प्रखण्डदान में आ चुका था इसलिए अब कुल मिलाकर पटना के २८ प्रखंडों में से १४ प्रखंड दान में आ चुके हैं, यानी आधा जिलादान हो चुका है, और बाकी का काम ३१ मई तक पूरा करने का सबने संकल्प घोषित किया है। जिलादान के बाद तुरन्त ही बिहार अनुमंडल में पुष्टि के काम का अभियान चलाने की योजना है ताकि अक्तूबर में राजगीर में होनेवाले अ० भा० सर्वोदय सम्मेलन में आनेवाले लोगों को उस क्षेत्र में कुछ देखने को मिल सके।

बाबा ने इस अवसर पर कहा, "प्रथम तो आप सबको धन्यवाद देना चाहिए। माना गया था कि पटना जिला कठिन जायगा। पटना बहुत बड़ा शहर है। वहाँ राजनीति का गढ़ है। जहाँ तरह-तरह की सैकड़ों सभाएँ होती रहती हैं। उस शहर को सब तरह की चीजें सप्लाई करना होता है, इससे उसके आसपास के गाँवों में 'मनी इकॉनामी' होगी। इन सब कारणों से पटना जिलादान कुछ कठिन जायगा ऐसा लगा था, और हमने भी सोचा था कि पटना बाद में ही जायँ, और विनोद में कहते थे—जहाँ किसीकी पटती नहीं, इसलिए उसका नाम पटना रखा। लेकिन आसपास के जिलादान हो गये और खासकर मुजफ्फरपुर, मुंगेर, गया आदि कठिन माने जानेवाले जिले ग्रामदान में आ गये तो पटना भी होना चाहिए, यह श्रद्धा रखकर हम यहाँ आये। यहाँ आने पर अनुकूल ही दर्शन हुआ। कहते हैं—अच्छा आरम्भ आधा काम पूरा करने जैसा होता है। परन्तु आप सब लोगों ने तो मिलकर आधा जिलादान यानी १४ प्रखण्डदान कर ही दिया है, तो पूरा करने में अब देर क्या? जिलादान के लिए ३१ मई आखीरी तारीख तय की, उसके लिए बाबा धन्यवाद देता है।" —कृष्णराज मेहता

आन्दोलन के समाचार

• उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में इटावा के अछल्दा ब्लाक में १५ अप्रैल से अभियान शुरू हुआ और १२५ ग्रामदान घोषित हुए। इटावा जिला के लोगों ने २ अक्तूबर तक जिलादान करने का संकल्प किया है। एटा जिले में अभियान चला रहे हैं। मथुरा में भी ३ मई से अभियान शुरू है।

पूर्वी जिलों में बस्ती के हर्रैया ब्लाक में अभियान चला और ४७ ग्रामदान प्राप्त हुए। इसके बाद नाथनगर में अभियान चलाया जायगा। गोरखपुर और देवरिया में भी अभियान चल रहे हैं।

• भंडारा (महाराष्ट्र) जिले में ग्रामदान प्राप्ति के लिए सघन सामूहिक पदयात्राएँ शुरू की गयी हैं। इस पदयात्रा में श्री प्र० गो० शेंदुर्णीकर और श्री बापट का मार्गदर्शन प्राप्त है। ७५ कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण-शिविर में ग्रामसेवक और शिक्षक भी थे। शिविर के बाद कार्यकर्ता ग्रामदान-प्राप्ति हेतु क्षेत्र में गये हैं।

• करनाल जिला सर्वोदय मण्डल के संयोजक श्री आनन्द रंक बन्धु, प्रतिनिधि श्री सत्यप्रकाश शर्मा बनाये गये। प्रान्तीय सर्वोदय मण्डल हरियाणा के संयोजक श्री शादीराम जोशी तथा मंत्री श्री सुन्दरलाल सच्चदेव सर्वसम्मति से चुने गये।

• बड़ौदा, २८ अप्रैल। प्राप्त जानकारी के अनुसार गुजरात सर्वोदय मण्डल के तत्त्वावधान में दाण्डी से पोरबन्दर तक चल रही गांधी-शताब्दी-पदयात्रा ने ९ जिले पूरे करके दसवें जिले बनासकांठा में ११ दिन घूमकर गत २४ अप्रैल से कच्छ जिले में प्रवेश किया है।

दस जिलों में १२४३ मील की पदयात्रा के दौरान अबतक ९,६७३ रुपये के सर्वोदय-साहित्य की बिक्री हुई, ७९७ सभाएँ की गयीं तथा गुजरात के सर्वोदय-आन्दोलन के मुखपत्र दश-वारिक "भूमिपुत्र" के ४,१६३ वार्षिक ग्राहक बनाये गये।

www.vinoba.in

अभ्यादकीय

नया नारा

नारा सचमुच नया नहीं है, सिर्फ लगाया जा रहा है इस वक्त नये जोर-शोर के साथ। नेताओं द्वारा यह बात बार-बार दुहरायी जा रही है कि अभी हमारी राजनीति पिछड़ी हुई है; उसमें निखार तब आयेगा जब 'ध्रुवीकरण' (पोलराइजेशन) होगा। और, जब राजनीति निखरेगी तो शक्तिशाली होगी, स्थायी होगी, कल्याणकारी होगी। कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी है, लेकिन उसमें विभिन्न हितों की खिचड़ी है। राइट, लेफ्ट, सेठ, किसान, मजदूर, आदि सब कांग्रेस के गड़बड़झाले में शामिल हैं। कांग्रेस कहती भी है कि वह सड़क के बीच से चलनेवाली पार्टी है, न दाहिने, न बायें। कांग्रेस के नेताओं में कुछ ऐसे हो गये हैं जो चाहते हैं कि अब कांग्रेस को भी दाहिने या बायें अपना एक रास्ता तय कर लेना चाहिए। राजनीति में जो सबका होना चाहता है वह किसी का नहीं हो पाता।

कांग्रेस के विरोध में जो संविद सरकारें बनीं वे भी खिचड़ी ही बनीं—ऐसी खिचड़ी जिसमें चावल अलग, दाल अलग। ऐसी खिचड़ी को खिचड़ी भी क्या कहें? इसलिए अब यह कहा जा रहा है कि खिचड़ी पकाना बन्द किया जाय। खिचड़ी सुपाच्य होती है, लेकिन हमारी राजनीति का पेट ऐसा है कि उसे खिचड़ी भी नहीं पच सकी। संविद के अनुभव के बाद अब यह बात चल पड़ी है कि सरकार बनाने के लिए भले ही कभी कुछ बातों में मेल-जोल कर लिया जाय, लेकिन राजनीति को ध्रुवीकरण का पौष्टिक भोजन मिलना चाहिए जो उसे जीवनी शक्ति दे सके।

राजनीति में क्या होता है? विभिन्न स्वार्थों का प्रतिनिधित्व और उनकी टक्कर। अगर राजनीति का यही उद्देश्य है तो कोई भी एक पार्टी मालिक और मजदूर, दोनों के स्वार्थों का प्रतिनिधित्व कैसे कर सकती है? राजनीति की दृष्टि में मालिक-मजदूर के हित परस्पर-विरोधी हैं। विरोधी हितों की विरोधी राजनीति होनी चाहिए। इस आधार पर मालिक यानी राइट की राजनीति अलग होगी, और मजदूर यानी लेफ्ट की राजनीति अलग। जब राजनीति में यह अलगाव होगा तो परस्पर-विरोधी हितों में होड़ होगी, संघर्ष होगा और सत्ता की छीना-झपटी ही राजनीति का मुख्य धन्धा होगी। यह होगी संघर्ष की राजनीति। ध्रुवीकरण संघर्ष की राजनीति का प्राण है। ध्रुवीकरण के बिना संघर्ष होगा कैसे?

ध्रुवीकरण की इस राजनीति में समाज के कौन से तत्व 'राइट' के साथ रहेंगे, और कौन से 'लेफ्ट' के साथ? पश्चिम की तरह भारत केवल वर्गों का देश नहीं है। हमारे यहाँ वर्ण, जाति, सम्प्रदाय, उतना ही महत्व रखते हैं जितना वर्ग। हमारे गाँवों में जो शोषित वर्ग है, सर्वहारा है, वह जाति से हरिजन है, और वर्ण में अवर्ण है। इसलिए राजनीति में ध्रुवीकरण हो, और समाज में न हो, यह संभव नहीं है। एक बार राजनीति में ध्रुवीकरण शुरू हो जायगा तो अनिवार्य है कि गाँव-गाँव के जीवन में, रोज के जीवन में, हिन्दू-मुसलमान में, सवर्ण-अवर्ण में, द्विज-हरिजन में, आदिवासी-गैर आदिवासी में, शहर-गाँव में, राज्य-राज्य में, भाषा-भाषा में, बूढ़े-जवान में, सबमें सब जगह ध्रुवीकरण होगा। यह कहना मुश्किल होगा कि कौन दो तत्त्व होंगे जिनमें नहीं होगा? अलगाव, दुराव, और टकराव की आज भी कमी नहीं है। उस वक्त तो संघर्ष सामूहिक जीवन का दैनिक भोजन बन जायगा। सहयोग और एकता का नाम नहीं रह जायगा। संघर्ष संसद और विधान-सभा तक सीमित नहीं रहेगा। सड़क, चौराहा, खेत और खलिहान, सब संघर्ष के क्षेत्र बन जायेंगे। अराजकता फैलेगी। गृहयुद्ध होगा। देश के टुकड़े होंगे। विदेशी हस्तक्षेप होगा। लोकतंत्र भीड़तंत्र बन जायगा। स्वतंत्रता समाप्त हो जायगी। हिंसा का बोलबाला होगा। भारत भारत नहीं रह जायगा। और क्या-क्या होगा, कौन जाने? संघर्ष के सिद्धान्त पर मतभेद हो सकता है, लेकिन उसके जो व्यावहारिक परिणाम हैं वे अनिवार्य हैं।

ध्रुवीकरण छिपा हुआ वर्ग-संघर्ष है, जाति-संघर्ष है, और सम्प्रदाय-संघर्ष भी है इसलिए अगर संघर्ष ही करना हो तो खुलकर करना चाहिए। फिर चुनाव, दल और लोकतंत्र के सारे घटाटोप की आड़ क्यों? क्यों न साफ-साफ कहा जाय कि हाथ में हथियार लो, और मैदान में उतरो। देश रहे या जाय, कम-से-कम संघर्ष तो हो जाय। राजनीति का पेट तो भरे!

संघर्ष की दिशा संहार की है। संघर्ष का अन्तिम लक्ष्य यही है कि प्रतिपक्षी का सफाया हो जाय। संघर्ष को शान्ति की मर्यादा में नहीं बाँधा जा सकता। संघर्ष होगा तो हिंसक ही होगा। हिंसा और लोकतंत्र, हिंसा और सभ्यता, हिंसा और जनता की मुक्ति, ये सब परस्पर-विरोधी तत्त्व हैं। इसलिए संघर्ष भी लोकतंत्र का विरोधी तत्त्व है। संघर्ष के बाद जनता पर विजेताओं का शासन होगा। वोट द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों का भी शासन समाप्त हो जायगा।

यही कारण है कि ग्रामदान शुरू से राजनीति की बात न कहकर लोकनीति की बात कहता आया है। लोकनीति की नजर में नागरिक की दुहरी हैसियत है : एक मनुष्य की, दूसरी मालिक की। हर मनुष्य मनुष्य है, हर मनुष्य में मनुष्य-तत्त्व है। और हर एक मालिक भी है : भूमि का, पूँजी का, बुद्धि का, श्रम का। जब मजदूर कोई है ही नहीं, तो मालिक-मजदूर का हित-विरोध कैसा? यह सही है कि समाज में शोषण है, लेकिन शोषक और शोषित के रूप में मनुष्य का बँटवारा नहीं किया जा सकता। लोकनीति में वर्ग नहीं, वर्ग-संघर्ष नहीं, दल नहीं, दल की राजनीति नहीं।

जरूरत इस बात की है कि देश के राजनीतिक संगठन के बारे में नये सिरे से सोचा जाय। व्यापार ने विज्ञान को कोरा यंत्रवाद बना डाला है। राजनीति में लोकतंत्र आंतकवाद होकर रह गया है। हमारे लिए यह व्यापार और यह राजनीति, दोनों त्याज्य हैं। हम विचार भी बदलें, और नारा भी।●

www.vinoba.in

शांति-सेना-सम्बन्धी विचारणीय मुद्दे

शांति का विचार और संगठन समाज में सदा से एक भला काम माना जाता रहा है। किन्तु आज विज्ञान ने इसे मात्र भला ही नहीं, वरन् अनिवार्य बना दिया है। गाँव से जगत् तक एकमात्र समस्या सबको बेचैन बना रही है, अशांति की समस्या। इस समस्या के साथ मनुष्य के अस्तित्व का प्रश्न जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि यह विचार सभी के हृदय को स्पर्श करता है और इसी प्रेरणा से आणविक शस्त्रास्त्रों के विशाल भण्डार के स्वामी लोग जिनेवा में बैठकर निःशस्त्रीकरण की वार्ताएँ आयोजित किया करते हैं। लेकिन व्यवहार में आये दिन भयंकर हिंसक विस्फोटों की पुनरावृत्ति हो रही दीखती है। आखिर यह विरोधाभास क्यों है? मनुष्य का विश्वास हिंसा पर से तो उठा हुआ दीखता है, किन्तु आपसी तनावों के हल की दृष्टि से हिंसा की वैकल्पिक शक्ति क्या होगी, वह अभी उसकी पकड़ में नहीं आ सका है।

इस देश में जाति, सम्प्रदाय, भाषा, प्रदेश, गरीबी, विषमता, सामाजिक अन्याय, राजनीतिक अस्थिरता आदि के सन्दर्भ में हिंसा की विकराल ज्वालाएँ राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र, समृद्धि तथा शांति को समाप्त करने पर तुली हुई दीखती हैं। देश के विचारवान् लोगों के मुख से भी तानाशाही की आकांक्षा प्रायः प्रकट होती रहती है। आज के स्टेट्स-को को बदलकर नव-समाज-रचना की दृष्टि से आमूल परिवर्तन लाने का हमारा महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम ग्रामदान है। किन्तु बेतहाशा फैलती हुई हिंसक विभीषिका की रोकथाम की दृष्टि से तात्कालिक कदम के रूप में हमें कुछ अधिक गहराई से सोचने की आवश्यकता है। सुझाव की दृष्टि से निम्नलिखित मुद्दे हो सकते हैं :

(१) आशंकित तनावपूर्ण क्षेत्रों में प्रभावशाली शांति-केन्द्रों का गठन।

(२) तटस्थ लोगों से सम्पर्क कर उनके सही अभिमत से जनमत निर्माण करना।

(३) तटस्थतापूर्वक समस्या का अध्ययन तथा हल की दिशा में पहल।

(४) तत्पर-दल का गठन।

(५) अहिंसक प्रतिकार—स्वरूप, प्रक्रिया तथा संभावित परिणाम।

उपर्युक्त परिस्थितियों के संदर्भ में शांति-सेना के वर्तमान स्वरूप को देखना उपयोगी होगा। रायपुर-सम्मेलन में अपने आन्दोलन का एक समग्र चित्र—त्रिविध कार्यक्रम के रूप में अंकित किया गया था। लेकिन आज सात वर्षों के बाद भी वह चित्र मूर्तरूप नहीं ले सका। ग्रामदान, खादी, शांति-सेना, तीनों अलग-अलग चलते रहे। पिछले कुछ दिनों से ग्रामदान-अभियान के सिलसिले में खादी-संस्थाओं की सक्रियता प्रकट हुई है। इस प्रकार ग्रामदान और खादी कुछ हद तक जुड़ सके हैं। यों थोड़ा उदारतापूर्वक विचार किया जाय तो खादी और ग्रामदान में लगे लोग शांति-सैनिक ही हैं, ऐसा कहना गलत नहीं होगा। लेकिन जब हम आन्दोलन और संगठन की दृष्टि से विचार करते हैं, तो शांति-सेना का चित्र अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता है, ऐसा लगता है। परिस्थिति आज यह है कि प्रदेशों में एक समर्थ व्यक्ति शांति-सेना के काम का उत्तरदायित्व उठाने के लिए मिल सके, यह संभव नहीं हो पा रहा है। अतः शांति-सेना के काम की अहमियत के साथ-साथ इसके लिए आवश्यक संयोजन की दिशा में भी सोचना जरूरी होगा। जैसे—

(१) प्रदेशों में एक सक्षम व्यक्ति को मात्र शांति-सेना के काम के लिए मुक्त करना।

(२) प्रदेश में शांति-सेना-समितियों को सक्रिय बनाने की दिशा में प्रयत्न करना।

(३) ग्रामदान में लगे कार्यकर्ताओं के शिविरों में शांति-सेना की चर्चा।

(४) गाँवों में ग्रामदान के साथ शांति-सेना की बातें करना।

(५) शांति-सैनिक, शांति-सेवक तथा तरुण शांति-सेना के निष्ठा-पत्र भरवाना।

(६) शांति-सेना शिविरों का आयोजन।

(७) शांति-सैनिकों द्वारा ग्रामदान-प्राप्ति।

(८) ग्रामदान के साथ-साथ शांति-सेना के काम की भी चर्चा, योजना, मूल्यांकन आदि करना।

(९) खादी-संस्थाओं में शांति-सेना की दृष्टि से कई कार्यक्रम उठाये जा सकते हैं। जैसे—निष्ठा-पत्र भरवाना, तत्पर-दल संगठित करना, शिविर आयोजित करना, आर्थिक संयोजन आदि।

ग्राम-शांति-सेना : देश में लगभग एक लाख ग्रामदान हो चुके हैं, प्रदेशों में जिलादान होते जा रहे हैं, कई प्रदेश प्रदेशदान का संकल्प कर चुके हैं, बिहार प्रदेशदान के नजदीक आया है। अतः 'ग्रामदान के बाद क्या?', अब यह प्रश्न हमारे सामने है। ग्रामदान को व्यावहारिक स्वरूप देने के लिए गाँव के ही व्यक्ति को आवश्यक प्रशिक्षण देकर तैयार करना होगा। उस दृष्टि से ग्राम-शांति-सेना के लिए काफी आशास्पद संभावनाएँ हैं। हर प्रदेश में ग्राम-शांति-सेना खड़ी करने का प्रस्ताव प्रबन्ध-समिति कर चुकी है। यह तभी संभव है, जब हम ग्रामदान के साथ-साथ इस ओर भी ध्यान देंगे। शांति-सेना-मण्डल की वर्तमान संगठन-शक्ति और क्षमता को देखते हुए यह बहुत बड़ा काम होगा, इसलिए अतिरिक्त साधन-शक्ति के बारे में हमें विचार करना होगा। उस दृष्टि से निम्नलिखित मुद्दे सोचे जा सकते हैं :

(१) ग्रामसभा के गठन के साथ ग्राम-शांति-सेना की स्थापना का संकल्प हो।

(२) ग्रामदानी गाँवों में पुलिस अदालत-मुक्ति के लिए प्रयत्न किये जायँ।

(३) कम-से-कम जहाँ जिलादान हो, वहाँ ग्राम-शांति सेना स्थापित करने का अभियान चलाया जाय।

(४) ग्रामदानी क्षेत्रों में ग्राम-शांति-सेना के शिविर आयोजित किये जायँ।

तरुण-शांति-सेना : आज युवकों का विद्रोह समाज के लिए सिरदर्द बनता जा रहा है। नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं को लेकर दोनों के बीच भयंकर खाई बन रही है। आदर्शोन्मुख होते हुए भी आदर्श के अभाव में युवक-वर्ग अनास्था की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। उनकी भावना व शक्ति का दुरुपयोग विभिन्न राजनीतिक दल अथवा संकीर्ण उद्देश्य रखनेवाले संगठनों की ओर से अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के

www.vinoba.in

लिए किया जा रहा है। दूसरी ओर अपने आन्दोलन को यह नयी पीढ़ी अच्छी तरह से समझे-बूझे और प्रत्यक्ष इसमें हाथ बँटा सके, यह उनके पुरुषार्थ को रचनात्मक मोड़ देने का बहुत बड़ा सुअवसर है। मण्डल ने तरुण-शांति-सेना के माध्यम से युवकों के बीच पिछले सात-आठ वर्षों से इस सन्दर्भ में एक नम्र प्रयास शुरू किया है। इस अल्पअवधि में किये गये प्रयास की तुलना में काफी उत्साहवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव आये हैं। इस सन्दर्भ में निम्न मुद्दों को दृष्टिगत रखते हुए विचार करना उपयोगी होगा :

(१) तरुण-शांति-सेना के लक्ष्य, कार्यक्रम, संगठन आदि पर विचार किया जाय।

(२) कार्यकर्ताओं के लड़के-लड़कियाँ तरुण-शांति-सेना में शामिल हों।

(३) हर सर्वोदय-मण्डल अपने प्रदेश के प्रमुख नगरों में तरुण-शांति-सेना केन्द्र गठित करें।

शांति-सैनिक तथा शांति-सेना

देश के शांतिप्रेमी नागरिकों के लिए शांति-सैनिक, शांति-सेवक के रूप में शांति-केन्द्रों के माध्यम से शांति का वायु-मण्डल तैयार करने तथा आपसी तनावों को प्रेमपूर्वक दूर करने की अनंत संभावनाएँ हैं। किन्तु यह काम भी बहुत ही उपेक्षित है। एक समय यहाँ १५,००० शांति-सैनिक और १,५०० शांति-केन्द्र संख्या में थे। 'छँटनी' के बाद आज यह संख्या क्रमशः ५,५०० और ६५० रह गयी है। यह भी बहुत सक्रियतापूर्वक काम में लगे हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। देश में शांति की हवा बन सके, शांति-सेना का काम यशस्वी हो, ऐसी मन्शा रखनेवालों को यह स्थिति गहराई से विचार करने के लिए बाध्य करती है। विचार करने की दृष्टि से कुछ प्रमुख प्रश्न हमारे समक्ष हैं :

(१) शांति-सैनिकों को तथा शांति-केन्द्रों को कैसे सक्रिय बनाया जाय ?

(२) शांति-सैनिकों के संयोजन, प्रशिक्षण, कार्यक्रम आदि पर विचार।

(३) इनके माध्यम से देश में शांतिमय वातावरण का निर्माण कैसे किया जाय ?

नगरों में काम

देश के प्रमुख नगरों में काम की दृष्टि से १०० नगरों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास हुआ, जिसमें ६५ नगरों से सम्पर्क हो चुका है। कुछ औद्योगिक बस्तियों में तथा साम्प्रदायिक दृष्टि से सम्भावित स्थलों में ठोस कार्यक्रम की नितान्त आवश्यकता महसूस होती रही है। छिटफुट प्रयासों के अतिरिक्त कुछ व्यवस्थित प्रयत्न की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में गांधी शांति प्रतिष्ठान, गांधी स्मारक निधि, खादी-ग्रामोद्योग आयोग तथा रचनात्मक संस्थाओं के समन्वित सहकार से एक निश्चित कार्यक्रम बनाया जाना उपयोगी होगा।

सीमावर्ती क्षेत्रों में काम

सन् १९६२ के बाद सीमा-क्षेत्रों में काम भी शांति सेना-मण्डल का एक महत्वपूर्ण एवं दीर्घकालीन कार्यक्रम बन गया है। देश की रचनात्मकसंस्थाओं से चुने हुए कार्यकर्ता इस काम के लिए आगे बढ़ने चाहिए।

भारत-पाक-सम्बन्ध

अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान में शासन-परिवर्तन हुआ। नये शासक श्री याह्या खाँ तथा इस बदली हुई परिस्थिति में वहाँ के नेता व आम जनता का भारत के प्रति क्या रुख होगा, अभी निश्चित नहीं कहा जा सकता। यह थोड़ी प्रतीक्षा करके अध्ययन करना होगा। यदि अनुकूलता दीखती हो, तो भारत को फिर से मैत्री का हाथ बढ़ाना चाहिए।

भारत में रहनेवाले मुसलमानों में भी पाकिस्तान की अस्थिरता को देखते हुए कुछ चिन्तन शुरू होना स्वाभाविक है। अतः हिन्दू-मुस्लिम एकता की दृष्टि से इस अवसर का लाभ मिल सकता है।

आज शांति सेना के काम की काफी शक्यताएँ तथा सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। इसकी अनिवार्यता समाज में तीव्रता से महसूस की जा रही है। हमारे आन्दोलन का यह यशस्वी पहलू है, किन्तु सचमुच संगठन, साधन, शक्ति तथा क्षमता के अभाव में सक्रियता नहीं आ पा रही है। आर्थिक दृष्टि से भी मण्डल की हालत काफी चिन्ताजनक है। अतः अर्थ-संयोजन के बारे में विचार करना आवश्यक है। ग्रामदान और खादी के साथ-साथ शांति-सेना पर भी सचमुच ध्यान देते हुए त्रिमूर्ति की तेजस्विता प्रकट करने का हमारा प्रयत्न होना चाहिए।

—तिरुपति अधिवेशन में प्रस्तुत

सन्दर्भ लेख—३

नया प्रकाशन

मनोजगत की सैर

लेखक : मनमोहन चौधरी

सर्व सेवा संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी की मनोवैज्ञानिक सूझबूझ और कलात्मक प्रतिभा का अद्भुत समन्वय : समाजशास्त्र, मनोविज्ञान का अध्ययन करनेवालों के लिए ही नहीं, आन्दोलन में लगे कार्यकर्ताओं के लिए भी पठनीय। मूल्य : ६ रु०।

लोकतंत्र : विकास और भविष्य

लेखक : आचार्य दादा धर्माधिकारी

बिहार के राज्यस्तरीय कार्यकर्ता-शिविर राँची में प्रस्तुत लोकतंत्र के ऐतिहासिक विकास का संदर्भ और भविष्य की सम्भावनाओं का शोधपूर्ण अध्ययन। मूल्य : २ रु०।

ग्रामदान और जनता

लेखक : डा० विश्वबन्धु चटर्जी तथा अन्य

जनता के मन पर ग्रामदान के प्रभाव का शास्त्रीय अध्ययन। मूल्य : २ रु०।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-१

www.vinoba.in

* गांधी-शताब्दी कैसे मनायें ? *

★ आर्थिक व राजनैतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए ग्रामदान-आन्दोलन में योग दें।

★ देश को स्वावलम्बी बनाने और सबको रोजगार देने के लिए खादी, ग्राम और कुटीर-उद्योगों को प्रोत्साहन दें।

★ सभी सम्प्रदायों, वर्गों, भाषावार समूहों में सौहार्द-स्थापना तथा राष्ट्रीय एकता व सुदृढ़ता के लिए शांति-सेना को सशक्त करें।

★ शिविर, विचार-गोष्ठी, पदयात्रा वगैरह में भाग लेकर गांधीजी के संदेश का चिंतन-मनन और प्रसार करें, उसे जीवन में उतारें।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति),
डुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

चार अधिवेशन और उनकी उपलब्धियाँ

कांग्रेस : 'लोक' और परम्पराएँ

हरियाणा क्षेत्र में पहली बार कांग्रेस महासमिति का ७२वाँ वार्षिक अधिवेशन २५ अप्रैल को प्रातः प्रारम्भ हुआ। दिल्ली-हरियाणा सीमा पर दिल्ली से सिर्फ २० मील दूर स्थित फरीदाबाद में कांग्रेस के अधिवेशन के लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री ने ३ लाख वर्गफुट का विशाल पण्डाल बनवाया था। इस अधिवेशन-स्थल को स्थायी नगर बनाने के इरादे से एवं दिल्ली में चल रहे संसद के अधिवेशन से नित्य केन्द्रीय मंत्रियों एवं सदस्यों को आने-जाने में सुविधा रहे, इस दृष्टि से फरीदाबाद उपयुक्त माना गया। अधिवेशन-स्थल का नाम परंपरानुसार हरियाणा के पुराने स्वातंत्र्य-सेनानी पं० नेकीराम शर्मा के नाम पर "नेकीराम शर्मा नगर" रखा गया।

अधिवेशन में भाग लेने के लिए दिल्ली से अधिवेशन-स्थल तक हरियाणा राज्य परिवहन और डी० टी० यू० की विशेष बसों की व्यवस्था थी। पश्चिम रेलवे व सेण्ट्रल रेलवे की सब महत्वपूर्ण ट्रेनों के फरीदाबाद न्यू टाउनशिप स्टेशन पर रुकने की व्यवस्था थी।

फरीदाबाद नगर में अ० भा० कांग्रेस, रेलवे, पुलिस, बिजली, लोकनिर्माण विभाग, प्रेस, सड़क, परिवहन और हरियाणा सरकार की आवश्यकताओं के लिए लगभग ३०० टेलीफोन लगाये गये। अन्तर्राष्ट्रीय तारघर के लिए पृथक् दूरमुद्रक लगाये गये, ताकि वहाँ से विदेशों में सीधे समाचार भेजे जा सकें। स्थानीय तथा ट्रंककाल के लिए बूथ बनाये गये और टेलीफोन विभाग की तरफ से वहाँ एक प्रस कार्यालय खोला गया।

फरीदाबाद के बारे में कहा जाता है कि सन् १९४७ में देश के कई अंचलों में सताये गये हिन्दू भागकर दिल्ली आये थे। तत्कालीन शासकों ने दिल्ली के पास ही इस फरीदाबाद में शरणार्थियों को बसाया। बसने के कुछ वर्षों के बाद यह शरणार्थी-कस्बा देश का एक औद्योगिक केन्द्र बन गया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि वहाँ ४०० से अधिक बड़े दरम्यानी उद्योग हैं, जिनमें १९००० से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

इस अधिवेशन-स्थल का अपना एक और ऐतिहासिक-धार्मिक महत्व है। ४९१ वर्ष पूर्व महाकवि सूरदास ने इस स्थल के पास सीही ग्राम में जन्म लिया था।

कांग्रेस का अधिवेशन २५ अप्रैल को शुरू हुआ। २५ अप्रैल की पूर्वसंध्या पर कांग्रेस-अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा का भव्य स्वागत किया गया। कांग्रेस-अध्यक्ष को लाल रंग की खुली कार में 'नेकीराम शर्मा नगर' ले जाया गया। बदरपुर से अधिवेशन स्थल तक ७ सुसज्जित गेट बनाये गये थे। मार्ग में दोनों ओर खड़े हजारों स्त्री-पुरुषों ने हर्षध्वनि के साथ पुष्प-वर्षा भी की।

इसी पूर्व संध्या पर अधिवेशन की विषय-सूची का निर्धारण करते हुए कांग्रेस कार्य-समिति ने तीन मण्डलों के गठन का प्रस्ताव रखा। सामाजिक व आर्थिक विषय तथा चतुर्थ पंचवर्षीय योजना से सम्बन्धित मंण्डल के सभापति श्री मोरारजी देसाई, राजनीतिक मण्डल के सभापति श्री यशवन्तराव चह्वाण और संगठन-सम्बन्धी मण्डल के सभापति श्री सादिक अली बनाये गये।

अधिवेशन-मण्डल के पीछे ही कांग्रेसाध्यक्ष और प्रधान मंत्री के विश्राम के लिए वातानुकूलित कक्ष बनाये गये थे। २५ अप्रैल को अधिवेशन के प्रारम्भ होने के आधे घण्टे के अन्दर ही भव्य पंडाल जलने लगा! कहा जाता है कि यह आग नवनिर्मित वातानुकूलित कमरों में बिजली के शार्ट सर्किट से लगी थी।

आग लगते ही भगदड़ मच गयी। श्री ढेबर भाई बिना चप्पल के भागे। श्री भक्तवत्सलम् गिर पड़े और उनकी बाहों की हड्डी टूट गयी। श्रीमती इंदिरा गांधी समेत अन्य वरिष्ठ लोगों को सावधानीपूर्वक सकुशल बाहर निकाल लिया गया, फिर भी अनुमान है कि लगभग १०० व्यक्ति आग से झुलस गये हैं। कुमारी मणिबेन का दाहिना हाथ झुलस गया है।

कांग्रेस पार्टी के इतिहास में ७२ अधिवेशनों में से आग द्वारा ध्वस्त होनेवाला यह तीसरा पण्डाल है। पहली बार सन् १९४६ में मेरठ अधिवेशन और दूसरी बार सन् १९५१ में दिल्ली अधिवेशन के समय आग लगी थी। कांग्रेसवालों को ही यह कहते हुए सुना गया कि दिल्ली और उसके आसपास का इलाका कांग्रेस-अधिवेशनों के लिए शुभ नहीं है।

कांग्रेस के इस अधिवेशन में युवा कांग्रेसियों ने महासमिति के पदाधिकारियों को स्पष्ट याद दिलाया कि कांग्रेस के घोषित दससूत्री कार्यक्रमों पर अमल नहीं किया गया तो सन् १९७२ में केन्द्र में कांग्रेस अपनी सरकार बना पायेगी, इसमें सन्देह है। कई कांग्रेसी नेताओं ने इसी स्वर में अपना स्वर मिलाया। आपस में तूँ-तूँ-मैं मैं होने से पूरा अधिवेशन बिना ठोस निर्णय किये ही समाप्त हो गया।

यह अधिवेशन जिस राजनीतिक पृष्ठभूमि में हुआ और कांग्रेस के सामने जो बड़ी पेंचीदी समस्याएँ थी उनको सुलझाना जरूरी था। इस सम्बन्ध में दो मत नहीं हैं कि कांग्रेस की शक्ति क्षीण हो रही है। उसके लिए ऐसी स्थिति पैदा हो गयी है कि सन् १९७२ में मिलीजुली सरकारों के बारे में अभी से सोचना पड़ रहा है। इस प्रकार के कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर कांग्रेस को अपनी नीति सुनिश्चित करनी थी और उस पर दृढ़ता से अमल करना था। लेकिन अन्यमनस्कता के कारण कुछ पास नहीं हुआ।

लोकतांत्रिक समाजवाद कांग्रेस का घोषित आदर्श है, इसकी सच्चे अर्थों में स्थापना होनी चाहिए। लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली में किसी राष्ट्र के भाग्य का उत्थान-पतन किसी दल के भाग्य के उत्थान-पतन से नत्थी नहीं होता। विकट समस्याओं के तूफान को देखकर शुतुर्मुर्ग की तरह निष्क्रियता की बालू में अपनी गर्दन गड़ाकर कांग्रेस ने त्राण पाने की जो नाहक कोशिश की है, उससे देश निराशा का शिकार हुआ है। यह निराशा केवल प्रशासन और संगठन में ही नहीं, लोकमानस में भी उपेक्षा का भाव जागृत करनेवाली है, जो कि लोकतंत्र और आजादी के लिए घातक सिद्ध होगी।

www.vinoba.in

जनसंघ : संशोधन के सुझाव

भारतीय जनसंघ का १५वाँ अधिवेशन दीनदयालनगर, दक्षिण बम्बई में २५, २६, २७ अप्रैल को हुआ। जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटलबिहारी बाजपेयी ने पार्टी का भगवाध्वज फहराकर वार्षिक सम्मेलन का श्रीगणेश किया। उस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा० एस० के० मुरंजन थे।

कार्यसमिति ने एक प्रस्ताव द्वारा केन्द्र-सरकार से अनुरोध किया कि जनतंत्र की आकांक्षाओं के अनुरूप चतुर्थ पंचवर्षीय योजना को वास्तविक रूप में स्वदेशी बनाये, ताकि सामान्य जनता को भी इसका लाभ मिल सके। देश में बढ़ती हुई विघटनकारी प्रवृत्तियों के— जैसे, असम के पहाड़ी राज्य की माँग, केरल में मल्लापुरम् जिले का निर्माण तथा बम्बई में शिवसेना के नाम पर तथा सीमा-विवाद के आधार पर आयोजित दंगाफसाद आदि पर गहरी चिंता व्यक्त की।

भारतीय जनसंघ की कार्यसमिति ने अपने अन्य प्रस्तावों में आर्थिक नियोजन, कृषि, और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के सम्बन्ध में यह आग्रह किया कि पूर्वाग्रह, परम्परा का निर्वाह और अस्पष्टता की नीति को त्यागकर वस्तुपरक दृष्टिकोण अपनाया जाय। पत्तून आन्दोलन को भी समर्थन देने पर सभी लोग एक राय रहे।

भारतीय जनसंघ के इस वार्षिक अधिवेशन में दूसरे राज्य-पुनर्गठन आयोग की माँग को राजनीतिक क्षेत्रों में बड़ा महत्त्व दिया गया है। पहला आयोग सन् ५८ में बना था और उसने भाषावार राज्यों के पुनर्गठन की योजना प्रस्तुत की थी।

हिन्दू महासभा : लोकतंत्र की चिंता

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के नागपुर में हुए ५२वें अधिवेशन में २७ अप्रैल को अध्यक्ष-पद से भाषण करते हुए श्री वृजनारायण वृजेश ने सुझाव दिया है कि देश का शासन पाँच वर्ष के लिए कुछ योग्यतम व्यक्तियों को सौंप दिया जाना चाहिए, क्योंकि वर्तमान स्थिति को देखते हुए देश में लोकतंत्र को स्थिर और सुरक्षित रखने का यही एकमात्र उपाय है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जिन योग्यतम व्यक्तियों को देश का शासन सौंपा जाय वे सर्वाधिक बुद्धिमान, अनुभवी, राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक होने चाहिए। भले ही वे किसी भी राजनीतिक दल से सम्बन्धित क्यों न हों। उन्होंने यह भी कहा कि देश में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं है।

श्री वृजेश ने विदेश-नीति में आमूल-चूल परिवर्तन करने तथा शत्रु-देशों के प्रति कड़ी नीति एवं नेपाल, जापान, बर्मा तथा मारीशस आदि पड़ोसी देशों से मैत्री-सम्बन्ध बनाने की नीति पर बल दिया।

हिन्दू महासभा ने रूस और अमेरिका पर भारत के साथ विश्वासघात का आरोप लगाया और भारत की रक्षा के लिए देश का सैनिकीकरण और अणुबम बनाने का सुझाव दिया है। १९ से २२ वर्ष के हिन्दू युवकों को अनिवार्य सैनिक-शिक्षा देने पर विशेष बल दिया गया है।

अध्यक्ष श्री वृजेश ने कहा कि यदि देश की आर्थिक स्थिति सुधारनी है तो सरकारी व्यय कम करने के लिए मंत्रियों की फौज की छँटनी के साथ साथ शान-शौकत पर बहाये जानेवाले धन पर भी रोक लगानी होगी तथा उत्पादन-वृद्धि में कागजी योजनाओं के बदले रचनात्मक कार्य करना होगा।

सर्वोदय : सर्वसम्मति की चुनाव-प्रणाली

दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थस्थान तिरुपति (आंध्रप्रदेश) में २३ से २५ अप्रैल तक सर्व सेवा संघ का अधिवेशन हुआ। देश के एक कोने में होने के कारण उतनी संख्या में प्रतिनिधि और लोकसेवक नहीं पहुँच सके, जितनी तादाद में प्रायः पहुँचते थे। इस संघ-अधिवेशन में नये अध्यक्ष का निर्वाचन हुआ। सर्वोदय जगत् में सर्वसम्मति का तरीका अपनाने की प्रणाली है। अध्यक्ष श्री एस० जगन्नाथन् और मंत्री श्री ठाकुरदास बंग बनाये गये। अध्यक्ष और मंत्री ने २१ सदस्यीय प्रबन्ध समिति का गठन किया है।

इस अधिवेशन में मुख्यतः ग्रामदान आन्दोलन चर्चा और चिन्तन का विषय था। इसलिए सर्व सेवा संघ का नवगठन भी ग्रामदान-आन्दोलन के अनुकूल किया गया है।

× × ×

इन चारों अधिवेशनों (कांग्रेस, जनसंघ, हिन्दू महासभा और सर्वोदय) के भीतर झाँककर देखने पर यह स्पष्ट हो गया कि इन सबके कार्यकर्ताओं में तत्काल परिवर्तन की आकांक्षा है। आकांक्षा ही नहीं, बल्कि असंतोष भी है। और यह असंतोष किसी व्यक्ति के प्रति नहीं, अपितु अधिष्ठानों के प्रति है, जिन पर संचालन का दायित्व है। वे नया परिवर्तन नहीं चाहते और फील्ड में काम करनेवाले पुरानी लीक पर चलना नहीं चाहते। क्रांति जिसका स्वधर्म है, वह स्वयं अपनी राह बनाकर आगे बढ़ना चाहता है। अब यह एक बुनियादी प्रश्न है कि क्रान्ति की स्पर्द्धा का नया स्वरूप क्या हो?

— कपिल अवस्थी

प्रति ग्राहक १ रुपया विशेष कमीशन

गांधी जन्म-शताब्दी वर्ष में

'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक बनाने का व्यापक अभियान चलायें

गांधी-विनोबा के विचारों को गाँव-गाँव घर-घर पहुँचाने के लिए और ग्रामस्वराज्य की बुनियाद डालने के लिए इस वर्ष 'भूदान-यज्ञ' के नये ग्राहक बनाने पर कार्यकर्ताओं को २० मई से प्रति ग्राहक १ रुपया कमीशन देने का निर्णय किया गया है। आशा है सब साथी इस अवसर का लाभ उठाने से नहीं चूकेंगे।

—व्यवस्थापक

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

www.vinoba.in

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम् । - ऋग्वेद
इस गाँव में स्वस्थ और परिपुष्ट विश्व का दर्शन हो।

इस अंक में

चुनाव । दल बनाम दल का नहीं, दल बनाम जनता क
अर्थशास्त्र या अनर्थशास्त्र ?
मणिपुर में सर्वोदय-कार्य
मृत्यु : एक इनसान की
कौन जीता ?
उत्पादक को क्या मिलता है ?
वैभव की फैलती दुनिया और टूटता-बिखरता आदमी
अम्बर चरखे का चमत्कार

१९ मई, '६९
वर्ष ३, अंक १९] [१८ पैसे

अब किसे भेजें ? : ३ :

चुनाव : दल बनाम दल का नहीं, दल बनाम जनता का

प्रश्न : आपने पहले बताया था कि एक निर्वाचन-क्षेत्र में ग्रामदानी ग्रामसभाओं का जो निर्वाचन-मंडल बनेगा वह चुनाव में अपनी ओर से एक सर्वसम्मत उम्मीदवार खड़ा करेगा। वह उस क्षेत्र की ग्रामसभाओं का उम्मीदवार होगा। ग्रामसभाओं के लोग इस अपने उम्मीदवार को वोट देंगे, और उसे जितायेंगे। यह बात तो मेरी समझ में आती है कि जिस उम्मीदवार के पीछे ग्रामसभाओं की शक्ति होगी उसका मुकाबिला कौन करेगा। लेकिन कठिनाई यह मालूम होती है कि निर्वाचन-मंडल अपना उम्मीदवार सर्व-सम्मति से तय कैसे करेगा ? मुझे नहीं लगता कि लोग किसी आदमी पर एक राय हो सकेंगे। आप ही बताइए कि यह सवाल कैसे हल होगा ?

उत्तर : आज जो हालत है उसे देखते हुए यही मानना पड़ेगा कि आप जो कठिनाई बता रहे हैं वह बहुत बड़ी है। लेकिन प्रश्न है कि इस कठिनाई को लेकर क्या हम बैठे रहेंगे ? क्या लोग आज की हालत को बदलना नहीं चाहते ? अगर बदलना नहीं चाहते तो कोई नयी बात सोचने की जरूरत क्या है ? लेकिन ग्रामदान आन्दोलन यह मानता है कि आज की हालत बदलनी चाहिए, और जल्द बदलनी चाहिए, और सबसे पहले राजनीति बदलनी चाहिए, क्योंकि राजनीति से सरकार चलती है। देश में बुनियादी परिवर्तन के लिए राजनीति का बदलना सबसे पहले जरूरी है।

सर्व-सम्मति कैसे हो ?

आखिर, एक राय से चुनाव हुआ ही

www.vinoba.in

प्रश्न : मैं मानता हूँ कि राजनीति को बदलना चाहिए। यह कौन नहीं मानेगा कि अगर आज की हालत न बदली तो देश का न जाने क्या हाल होगा ? मैं दिल से चाहता हूँ कि पार्टी-बन्दी का गंदा सिलसिला टूटे, लेकिन क्या बताऊँ, रह-रहकर मन में एक ही सवाल उठता है : 'क्या निर्वाचन-मंडल सर्व-सम्मति से अपना उम्मीदवार तय कर सकेगा ?'

उत्तर : सबसे बड़ी यह बात है कि गाँव के लोगों ने ग्राम-दान के विचार को कहाँ तक समझा है, और समझकर उन्होंने अपनी ग्रामसभा का कितना मजबूत संगठन किया है। देखिए, ग्रामदान जिस ग्रामस्वराज्य का नारा लगा रहा है उसकी बुनियादी शर्त यह है कि गाँव के लोगों को मिलकर अपने गाँव की व्यवस्था चलानी है। जो काम गाँव के लोग अपने-आप नहीं चला सकते उसके लिए सरकार जरूरी है, लेकिन उस सरकार को गाँव के मेल में चलना चाहिए, इसलिए जरूरी है कि गाँव के लोग सरकार में अपने आदमी भेजें। गाँव के नाम में दलों के लोग न जायँ। अगर गाँव के लोग इतनी बात समझ जायेंगे तो गाँव-गाँव में एकता और संगठन की हवा फैल जायगी। हर गाँव में दस-दस, बीस-बीस लोग ऐसे निकल आयेंगे जो देखेंगे कि गाँव एक हो, और संगठन मजबूत हो। गाँवों की इस हवा के प्रभाव में उनके निर्वाचन-मंडल की बैठक होगी। क्या आप सोचते हैं कि गाँव-गाँव की इस बदली हुई हवा का असर नहीं होगा ?

प्रश्न : जरूर होगा। फिर भी जाति, दल आदि के कारण सर्व-सम्मति में रुकावट पड़ सकती है। अगर रुकावट पड़ गयी तो क्या होगा ?

उत्तर : हम सोचें कि निर्वाचन-मंडल के सामने क्या-क्या स्थितियाँ आ सकती हैं। अगर कोई एक ही नाम आया, और ऐसे आदमी का नाम आया जिसकी सेवा-भावना और नेकनीयती पर सबको भरोसा है, तो सवाल फौरन हल हो जायगा। लोग खुशी से उसे मान लेंगे। किसी-किसी निर्वाचन-क्षेत्र में ऐसा होगा। कठिनाई शुरू होगी जब एक से अधिक नाम आयेंगे। मान लीजिए कि आपके निर्वाचन-मंडल के सामने ६ नाम आ गये। सोचिए कि उस समय निर्वाचन-मंडल क्या करेगा ? एक उपाय यह हो सकता है कि निर्वाचन-मंडल इन ६ सज्जनों से कहे : 'हमारे लिए आप सभी योग्य हैं, लेकिन उम्मीदवार हमें एक ही चुनना है। हम चाहते हैं कि आप लोग थोड़ी देर के लिए अलग बैठ जायँ और आपस में तय करके एक नाम हमें बता दें। हम वही नाम मान लेंगे।' कई जगह यह उपाय सफल हो जायगा।

प्रश्न : लेकिन अगर न सफल हुआ तो ?

उत्तर : दूसरा उपाय भी है। निर्वाचन-मंडल अपने में से चार-पाँच व्यक्तियों की एक छोटी समिति बनाकर उसे यह काम सौंप सकता है कि वह एक राय होकर इन ६ नामों में से जिसे तय कर देगी उसे निर्वाचन-मंडल मान लेगा। यह उपाय अच्छा है, और कई जगह लोग इसे पसंद करेंगे।

प्रश्न : इससे भी काम न बना तो ?

उत्तर : तो यह हो सकता है कि जो ६ नाम सामने हैं उनमें से कौन नाम सौ में नब्बे लोगों को मान्य है, यह देखा जाय। पहले से यह तय रहे कि जो व्यक्ति ऐसा निकलेगा उसे सर्वमान्य माना जायगा।

प्रश्न : यह कैसे देखा जायगा ?

उत्तर : उसका उपाय है। वोट लेकर देख लीजिए कि कौन ऐसा है जिसे सौ में नब्बे लोग मानते हैं। जो ऐसा निकल आये उसे उम्मीदवार मान लीजिए। यह सर्व-सम्मति नहीं तो सर्वानुमति होगी।

प्रश्न : मान लीजिए कि कोई ऐसा नहीं निकलता, तो ?

उत्तर : तब एक तरीका दूसरा निकल सकता है।

प्रश्न : वह क्या ?

उत्तर : वह यह होगा कि बार-बार वोट लीजिए और छँटनी करते जाइए। पहली बार यह तय करके वोट लीजिए कि जिसे ७० फीसदी या ७५ फीसदी वोट नहीं मिलेगा वह छँट जायगा। इसी तरह फीसदी वोट बढ़ाते जाइए, और छाँटते जाइए। अन्त में जो एक बच जाय उसे सर्व-सम्मत उम्मीदवार मान लीजिए। यह भी हो सकता है कि जब दो या तीन उम्मीद-वार बच जायँ तो चिट्ठी डाल लीजिए। चिट्ठी डालकर एक नाम निकालने का काम शुरू में भी किया जा सकता है। आजकल वोट पूरा-पूरा हिकमत का खेल हो गया है; आप किस्मत का थोड़ा इस्तेमाल कर लेंगे तो कोई हर्ज नहीं होगा।

प्रश्न : उपाय तो आपने बहुत अच्छे बताये। मुझे खुद आपसे बातें करते-करते दो-एक उपाय सूझ रहे हैं।

उत्तर : बताइए।

प्रश्न : क्या यह नहीं हो सकता कि निर्वाचन-मंडल के सामने जितने नाम आयें उस पूरी सूची को मंडल ग्रामसभाओं के पास वापस भेज दे, और कहे कि ग्रामसभाएँ अपनी बैठक करके अपनी पसन्द तय करें और पसन्द के क्रम में नाम लिखकर वापस मंडल के पास भेज दें। पसन्द के अनुसार अंक तय कर लिये जायँ, जैसे पहली पसन्द के ५० अंक, दूसरी के ४०, तीसरी के ३०, और इसी तरह जिस नाम को सबसे अधिक अंक मिलें →

www.vinoba.in

अर्थशास्त्र या अनर्थशास्त्र ?

एक बड़े किसान के साथ चर्चा हो रही थी। 'मजदूरों और हरिजनों का तकलीफ-भरा जीवन', यही चर्चा का विषय था। 'चीन का हमला भूखों के पेट में हो रहा है।'—मैंने कहा। वह सहानुभूतिपूर्वक सुन रहे थे। आखिर में उन्होंने कहा, "बात तो सही है। लेकिन हम लोगों की हालत भी कोई सन्तोषजनक नहीं है। मैं दस बैलों की खेती करता हूँ। एक-एक बैल पर १०० रुपये माहवारी खर्च करता हूँ। परिवार का खर्च भी लगभग २००० रुपये माहवारी है। इतना खेती से निकलता नहीं है। हम लोग कर्ज लेकर ही जी रहे हैं।"

सवा रुपये रोज कमानेवाले मजदूर का पेट नहीं भरता है, ३००० रुपये माहवारी खर्च करनेवाले किसान का पेट नहीं भरता है। रुपये की यह कौनसी माया है? बड़ा किसान पैसे कमाने के लिए खेती कराना चाहता है, और उस चक्कर में बैल के पोषण-पालन पर १०० रुपये माहवारी खर्च करता है और बैल की सेवा करनेवाले मजदूर पर लगभग ४० रुपये। शायद बैल की तरह मजदूर भी उसके इशारे का गुलाम होता, तो उसका मालिक उसके लिए ज्यादा फिक्र करता! क्योंकि वह भूखों मरता तो मालिक को नुकसान होता। लेकिन आजकल वह भूखों मरता है, तो दूसरे मजदूर खोजने नहीं पड़ते, अपने आप ही मिल जाते हैं!

समझदार बड़े किसानों को भी अब ग्रामस्वराज्य का महत्व समझना चाहिए। यदि रुपये कमाने के बदले में ये गाँव की जरूरतों को पैदा करने के लिए खेती करेंगे, तो बहुत तेजी से परिस्थिति में सुधार आ जायगा। हिसाब लगाकर, गाँव में जितना अनाज चाहिए, उसके लायक अनाज, गाँव की जरूरत भर के कपड़े के लिए कपास, गाँव को जितना तेल चाहिए, उसके लायक तिलहन, गाँव के पशुओं के लिए जितनी खुराक चाहिए, उतना चारा-दाना पैदा करेंगे, और बाहर के बाजार में बेचने के लिए भटकने के बदले गाँव के पूरे पोषण की व्यवस्था करेंगे, तो गाँव में सबका पालन-पोषण आसानी से हो सकेगा। आजकल रुपया पैदा करनेवाली फसलों पर जोर है, कपास और तिलहन जैसी चीजों पर। कपास बाहर बेची जाती है। बिनौले बैलों को नहीं मिलते हैं। दस रुपये में जितनी कपास बेची गयी उससे जितना कपड़ा बना उसे खरीदने में गाँव को लगभग सौ रुपये नकद बाजार में देना पड़ता है। तिलहन भी शहर की मिलों में पेरा जाता है। बैल की खुराक, खली भी बाहर गयी। और, गाँववाले उसी तिलहन का सत्वहीन और मिलावटी तेल शहर के महँगे दामों में खरीदते हैं। जहाँ गन्ने की खेती होती है, वहाँ पर गन्ना मिल में जाता है, और गाँववाले अपने गाँव का बना स्वास्थ्यकर गुड़ खाने के बदले सफेद, सत्वहीन चीनी बाजार से खरीदकर खाते हैं।

इसमें सिर्फ मजदूर और छोटे किसानों को नुकसान नहीं है, बड़े किसानों को भी है। यदि गाँव में स्वावलम्बी, एक-दूसरे के सहयोगवाली व्यवस्था चलती, गाँव की आवश्यकता गाँव में पैदा की जाती, गाँव में ही उसका विनिमय होता, गाँव के कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही बनता, तो कितना फर्क होता! बड़ा किसान मालिक न रहकर बड़ा भाई बन जाता। वह अपने व्यक्तिगत परिवार के लिए फिक्र करने के साथ-साथ अपने ग्राम-परिवार के लिए योजना बना लेता, तो गाँव भी सुखी होते, और वह भी अपने परिवार के साथ सुखी होता। तब बैलों को भरपेट खुराक मिलती, मजदूर को भरपेट खुराक मिलती, और बड़े किसान को भी अपने घर की आवश्यकता पूरी करने में आसानी होती। तब गाँव में भी अच्छे शिक्षण, आरोग्य की व्यवस्था हो पाती। उन्हें ऐसी आवश्यकताओं के लिए शहरों में जाने और अपनी कमाई बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं होती। यह बात 'अशिक्षित' देहाती भाइयों को समझ में जल्दी आ जाती है, क्योंकि यह व्यवहार बुद्धि की बात है। —सरला देवी

→उसे सर्व-सम्मत उम्मीदवार मान लिया जाय।

उत्तर : हाँ, यह भी एक तरीका हो सकता है। बात यह है कि एक बार जब आप यह निर्णय करके बैठेंगे कि कुछ भी हो सर्व-सम्मत उम्मीदवार चुनना ही है तो एक नहीं अनेक उपाय सूझेंगे। गाँव के लोगों में गृहस्थ-बुद्धि होती है। वे कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेंगे।

प्रश्न : जो निर्वाचन-मंडल उपाय नहीं निकाल सकेगा वह निकम्मा साबित होगा।

उत्तर : वह अनुभव से सीखेगा। उस क्षेत्र की जनता उसे धिक्कारेगी, और जोर डालेगी कि अगली बार ऐसा न हो।

प्रश्न : लेकिन मेरा ख्याल है कि अगर गाँव-गाँव में विचार पहुँचा दिया जायगा, और संगठन हो जायगा तो अधिकांश निर्वाचन-क्षेत्र में सफलता मिलेगी। सबसे बड़ी रुकावटें दो ही हैं—दल और जाति।

उत्तर : हाँ, रुकावटें तो हैं ही। लेकिन इन कठिनाइयों के सामने जनता को हार नहीं माननी है। अगर जनता अगली बार हार गयी तो समझिए बहुत दिनों के लिए गयी। अब चुनाव दल बनाम दल का नहीं, दल बनाम जनता का होगा। आप ही बताइए कि दल और जनता में किसकी कीमत ज्यादा है? •

www.vinoba.in

मणिपुर में सर्वोदय-कार्य

ब्रह्मदेश की सीमा पर, इम्फाल से तीस मील पूर्व बसे कक-चिंग गाँव के १७० परिवारों ने मिलकर एक 'सर्वोदय संघ' गठित किया है, जिसके प्रमुख काम हैं—भूदान, संपत्तिदान, सर्वोदय-पात्र, धानकुटाई-उद्योग, खादी-उत्पादन-केन्द्र। गाँव का अनाज संग्रह करने के लिए श्रमदान से एक गोदाम बनाया है। सर्वोदय संघ जरूरतमंदों को अनाज और गरीब मेहनती विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ देता है, तथा उन्हें यह निवेदन करता है कि ली हुई राशि बाद में लौटा दें ताकि अन्य विद्यार्थी लाभ उठा सकें। हाईस्कूल के आठ (सभी) शिक्षक अवैतनिक हैं, वे मात्र अस्सी से सौ रुपये मासिक 'आनरेरियम' लेते हैं। निमाई नामक एक शिक्षक एम० ए० हैं और सांध्य-कालेज में प्रवक्ता भी हैं। हेडमास्टर गंधार सिंह इन सब कार्यों के प्राण हैं। वे और निमाई कुछ दिन विनोबा-पदयात्रा में रहे, और बस, गांधी-विचार में रंग गये।

एक-तिहाई जनसंख्या भूमिहीन है, किन्तु कोई भूखा नहीं है। "सामूहिक उत्तरदायित्व" गंधार सिंह के कार्य का मूल तत्त्व है। पंचायत की और सरकार की उपेक्षा, धान की जबरन लेवी, स्कूल की मान्यता उठा लेने का भय, और शराबखोरी, वे मुख्य समस्याएँ बतलाते हैं।

स्वामी शिवानन्द ऋषिकेश की शाखा 'दिव्य जीवन सेवा समिति' साप्ताहिक सत्संग और श्रमदान आयोजित करती है। इसके छात्र-स्वयंसेवक तथा मंत्री निर्गथेमजओ शराब और अन्य सामाजिक कुरीतियों को बदलने के लिए लोक-शिक्षण करते हैं। सांध्य-सत्संग में मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनकर सबने ग्रामदान से सहमति बतलायी।

लोहे के सुघरे हुए कृषि के औजार बनाते हुए, बढ़ईगिरी करते हुए, 'सहकारी समिति' के माध्यम से गुड़-खांड़सारी निर्मित करते हुए, ग्रामीण अत्यन्त परिश्रमी दीख पड़े। कतार में बने कच्चे घर, बिना सरकारी सहायता लिये रास्ते-पुलिया और कालेज-भवन का निर्माण, जनशक्ति के अनुपम नमूने हैं। गाँव-गाँव में सस्ते किस्म के बाजारू बंबइया हिन्दी सिनेमा के प्रभाव को देखकर दुःख होता है, यद्यपि हिन्दी भाषा के प्रसार में इनसे बड़ी मदद मिली है। सत्यजीत राय के गंभीर बंगला खेल लोग देखें, तो क्या ही अच्छा हो। आर्ट्स्-कालेज की वृद्धि होते देख, प्रश्न उठता है कि ये गाँव के लिए कितने उपयोगी हैं? विद्यार्थी गरीब पिता के पैसे बर्बाद करें, नौकरी की व्यर्थ आशा रखें और फिर निराश होकर कम्युनिस्ट बन जायँ, क्या यही है शिक्षा? वे क्या ज्ञान पाने आते हैं? और फिर ये अभावग्रस्त कालेज कितना ज्ञान दे सकते हैं? वे मात्र सम्मान-सूचक चिह्न हैं। पालिटेक्निक स्कूल (यंत्र-सम्बन्धी शिक्षालय) गाँव की अधिक सेवा कर सकते हैं।

बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान के बारह शिक्षक और प्रशिक्षार्थियों ने मेरे भाषण के बाद, अपना प्रेम दर्शाने के लिए मार्ग-व्यय हेतु एक-एक रुपया दिया। श्रोताओं में एक नाई भी था, जिसने मेरे बाल काटे तथा एक रुपया और दो संतरे दिये, और इम्फाल जानेवाले एक ट्रक में बैठा दिया। जब लोग आप पर इतना प्रेम बरसाते हैं, तब क्या भीतर से एक आवाज नहीं उठती है—'क्या मैं इस लायक हूँ?' और अगर नहीं हूँ तो बनना चाहिए? यही आवाज उठी, जब भाई आदू ने जबर्दस्ती मेरी जेब में दस रुपये डाल दिये, जब विनोद कुमार ने पाँच रुपये हाथ पर धर दिये।

मणिपुर नृत्यों का प्रदेश है, स्त्रियों का प्रदेश है। यहाँ की दो विशेषताएँ हर दर्शक को मोहित करती हैं। एक तो, कृष्ण-चैतन्य की भक्तिप्रधान वैष्णव-परम्परा। बर्मा और चीन के बगल में होते हुए भी, मणिपुर में सनातन हिन्दू धर्म बचा हुआ है। यहाँ एक हनुमान-मंदिर है, जिसे पाँच शताब्दी पूर्व चीनियों ने आकर बनाया बताते हैं। दूसरी प्रधान विशेषता है, हर क्षेत्र में यहाँ की स्त्रियों की बराबरी और सम्मान। दुरंगे वस्त्रों में, जिन्हें वे स्वयं बुनती हैं, स्वतंत्रता से साइकिलों पर वे घूमती हैं। सौम्य चेहरे, नाक और माथे पर चंदन का तिलक। सूत कातने की कला अवश्य समाप्त होती जा रही है, क्योंकि बाजार में मिल का सूत सुविधा से मिल जाता है।

पंडित शिवदत्त के गीता-क्लास में हम शरीक हुए। बाजार के मध्य में स्थित 'गीता-मंदिर' में हर शाम दो-चार श्रोता आकर गीता-प्रवचन सुनते हैं। शिवदत्तजी शिकायत करने लगे कि मणिपुर पर सर्वोदय की छाप पड़ना बाकी है। "गीता-प्रवचन" की मणिपुरी भाषा में छपी एक हजार प्रतियाँ भी नहीं बिक सकीं। "एक अच्छा त्यागी सर्वोदय-कार्यकर्ता भेजिए", उन्होंने माँग की। मैंने विरोध किया, "मणिपुर में जब कि दस लाख लोग हैं, तब बाहर से एक व्यक्ति लाने की क्या जरूरत है? सर्वोदय एक विचार है, जीवन-पद्धति है, पंथ या संप्रदाय नहीं। यदि एक व्यापारी, वकील, शिक्षक या किसान प्रतिदिन अपना काम सचाई-ईमानदारी से करता है, तो वह सर्वोदय-कार्य ही है।" इसे मैंने एक छात्र-सभा में समझाया। कुछ छात्र जेल की सजा भुगत आये थे, जिन्होंने "मणिपुर राज्य" बनाने की माँग करते हुए गणतंत्र-दिवस का बहिष्कार किया था। मैंने

www.vinoba.in

मृत्यु : एक इन्सान की

डा० जाकिर हुसैन की मृत्यु का समाचार ऐसे समय मिला जब कि ऐसी खबर सुनने की तैयारी मन की थी नहीं। ३ मई को अचानक रेडियो ने खबर दी कि राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन अब नहीं रहे! हृदय-गति रुक जाने से उनकी मृत्यु हुई। 'सारा भारत मेरा घर और उसके लोग मेरा परिवार', जो ऐसा मानता था उसके अचानक उठ जाने की खबर से भारत भर में फैला विशाल परिवार शोक-सागर में डूब गया। जिसने यह खबर सुनी और जो उनको कुछ निकट से जानता था, या जो थोड़े समय के लिए भी उनके सम्पर्क में आया था उसने यही कहा कि वह भले आदमी थे। किसीका नुकसान करना तो क्या, वह ऐसा सोच भी नहीं सकते थे। वह भारत के सबसे ऊँचे पद पर थे, शिक्षा-शास्त्री थे, विद्वान थे, अहंकार तो जैसे उन्हें था ही नहीं। असाधारण गुण उनके जीवन में कूट-कूटकर भरे थे, लेकिन साधारण मनुष्य से कभी भी उन्होंने अपने को बिलग नहीं होने दिया। और यही कारण था कि उन्हें साधारण लोगों का प्रेम प्राप्त था।

डा० जाकिर हुसैन स्वयं मुसलमान थे, लेकिन आदमी और आदमी के बीच सम्प्रदाय (हिन्दू-मुस्लिम) रूपी दीवाल को उन्होंने कभी खड़ा नहीं होने दिया।

डा० जाकिर हुसैन का जन्म ८ फरवरी, १८९७ में हैदराबाद में हुआ। उनके पिता वकील थे। वह ८ वर्ष के ही थे कि उनके पिता का देहान्त हो गया। सन् १९०७ में उनका परिवार इटावा पहुँच गया। वहाँ ही उन्होंने इस्लामिया हाईस्कूल में शिक्षा पायी। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में एम० ए० पास करने के बाद वह सन् १९२३ में जर्मनी चले गये और वहाँ बर्लिन विश्वविद्यालय में पीएच० डी० की डिग्री प्राप्त की।

डा० जाकिर हुसैन गांधीजी की बुनियादी शिक्षा के विचार को मानते थे और उन्होंने बुनियादी शिक्षा के विकास का भरसक प्रयत्न किया और उसे एक शास्त्रीय रूप दिया। जामिया मिलिया को उन्होंने प्रयोगशाला बनाया था। उनका मानना

डा० जाकिर हुसैन और विनोबा

था कि जामिया मिलिया से जितने छात्र पढ़ाई पूरी करके निकलें, सबके सब अध्यापक बनें और अध्यापन-कार्य से देश की सेवा करें।

डा० जाकिर हुसैन बच्चों में देशभक्ति की भावना पैदा करने तथा उत्साह को बढ़ानेवाली छोटी-छोटी कहानियाँ भी लिखा करते थे। (उनकी एक कहानी अलग से अगले पृष्ठ पर दे रहे हैं।)

डा० जाकिर हुसैन शिक्षक थे। शिक्षक का आदर करते थे और जब राष्ट्रपति हुए तो उसको एक शिक्षक का सम्मान ही बताया था। शिक्षक और शिक्षा की मौजूदा हालत को देखकर उन्हें कष्ट होता था। बीच-बीच में जब भी अवसर मिलता था वह अपना अफसोस जाहिर करते रहते थे।

डा० जाकिर हुसैन की याद बनी रहेगी एक सही इनसान के रूप में। वह इंसानियत की ऐसी थाती छोड़ गये हैं जिन्हें सम्हालना हमारा-आपका काम है।

→उनसे प्रश्न किया, कि जब आप मंगल-ग्रह पर उतरेंगे और पूछे जायँगे "कहाँ से आये हैं?" तब मंगल निवासियों को क्या उत्तर देंगे? कि, "मणिपुर राज्य से आये हैं?" नहीं, वहाँ आप कहेंगे, "हम पृथ्वी से आये हैं।" है न? जब हमारी दुनिया इतनी छोटी होती जा रही है, तब प्रांत-राज्य की सीमाएँ खड़ी करना कहाँ तक उचित है?

छात्रों ने रोष प्रकट किया, कि भारत ने मणिपुर को पिछड़ा हुआ रहने दिया, उद्योग-धंधे नहीं खोले। मैंने उन्हें शांत किया, कि बिहार-उड़ीसा के कुछ हिस्से आपसे अधिक पिछड़े हुए हैं, जहाँ वर्षा में कहीं-कहीं हाथी पर सवार होकर जाना पड़ता है। न रास्ते हैं, न बिजली। कुछ गरीब गाँवों में तेल का दीपक भी नहीं मिलेगा। न पीने का स्वच्छ पानी उपलब्ध है, न जोतने के लिए भूमि।

छात्रों ने सर्वोदय में अत्यधिक दिलचस्पी ली, अनेक प्रश्न किये। वे कुछ करने को उत्साही थे। यहाँ सर्वोदय-अध्ययन-मंडली की नींव डाली गयी। —जगदीश बाबानी

www.vinoba.in

कौन जीता ?

अल्मोड़ा में एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम अब्बू खाँ था। उन्हें बकरियाँ पालने का बहुत शौक था। अकेले आदमी थे। बस, एक-दो बकरियाँ रखते। अब्बू खाँ बड़े गरीब थे और बदनसब भी। उनकी सारी बकरियाँ भा कभी-न-कभी रस्सी तुड़ाकर भाग जाती थीं। वे भाग-कर पहाड़ पर चली जाती थीं। वहाँ एक भेड़िया रहता, जो उन्हें खा जाता। एक दिन वे एक बकरी मोल लाये थे। यह अभी बच्ची ही थी। अब्बू खाँ ने सोचा कि कम उम्र की बकरी लूँगा तो शायद मेरे से हिल जाय। उन्होंने इसका नाम चाँदनी रखा। लेकिन एक दिन चाँदनी भी निकल भागी। पहाड़ पर पहुँची तो भेड़िये के आगे सिर नहीं झुकाया। वह खूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़ियों से पार नहीं पा सकतीं, वह तो केवल यह चाहती थी कि अपनी क्षमता के मुताबिक मुकाबिला करे, जीत-हार पर काबू नहीं, वह तो अल्लाह के हाथ है। मुकाबिला जरूरी है। चाँदनी रात भर भेड़िये का मुकाबिला करती रही, पर सुबह होते-होते चाँदनी बेदम हो जमीन पर गिर पड़ी। उसका सफेद बालों का लिबास खून से सुर्ख (लाल) था। भेड़िया उसे दबोचकर खा गया।

कहानी अभी खत्म नहीं हुई, इसका असली मकसद बाकी है। कहानी खत्म इस प्रकार होती है कि पेड़ पर बैठी चिड़ियाँ यह सब देख रही थीं। उनमें यह बहस चल रही थी कि जीत किसकी हुई। सब कहती थीं कि भेड़िया जीता, पर एक बूढ़ी चिड़िया बोली—'नहीं, चाँदनी जीती !'

—डा० जाकिर हुसैन

उत्पादक को क्या मिलता है ?

(१) एक सौ रुपये का अनाज बेचने पर बेचनेवाले किसान को बाजार के ये खर्च चुकाने पड़े :

आढ़त	१.००
पल्लेदारी	०.१६
धर्मादा	०.०६
व्यापार मंडल	०.०५
दलाली	०.२५
गोशाला	०.०३
गोपाल मन्दिर	०.०३
कमेटी	०.०१
तौलाई	०.०८
अन्य	०.१२
चुंगी	०.४०
कुल :	२.२२

(२) खरीदनेवाला ग्राहक क्या देता है ?

मंडी के भीतर ढुलाई	०.१६
तौलाई	०.०५
निकासी	०.०५
दलाली	०.२५
कुल :	०.५४

कुल बाजार-खर्च में ८० फीसदी बेचनेवाला देता है, और २० फीसदी खरीदनेवाला देता है।

(३) ग्राहक जो दाम देता है उसमें से उत्पादक को कितना मिलता है ?

गाँव में उत्पादक को	७६.३३
बाजार तक गाड़ी-भाड़ा	२.३६
इकट्ठा करने का खर्च जो बेचनेवाला देता है	२.६७
बिक्रेता का मुनाफा	५.८२
बिक्रेता को कुल मिला	८७.४८
इकट्ठा करने का खर्च जो ग्राहक देता है	०.५२
आढ़ती को मिलता है	३.३७
कुल :	९१.३७
रिटेलवाले को जो बाजार का खर्च देना पड़ा	४.८०
रिटेलवाले का मुनाफा	३.८३
ग्राहक ने दिया कुल :	१००.००

अगर उत्पादकों का सहकारी संगठन हो तो ग्राहक के दिये हुए दाम में से एक बड़ा भाग जो बीचवाले लोगों की जेब में चला जाता है बच जाय और किसान को मिले। किसान पैदा करे, और फायदा बाजार उठाये तो किसान कैसे पैदावार बढ़ायेगा, और क्यों बढ़ायेगा ?

www.vinoba.in

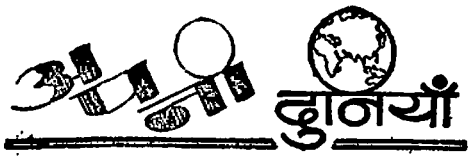

आज की दुनियाँ

वैभव की फैलती दुनिया और टूटता-बिखरता आदमी

अपने बहुत ही निकट के एक मित्र की बीमारी की खबर पाकर कल हम उन्हें देखने गये थे। वहाँ और भी कई पुराने दोस्तों से मुलाकात हो गयी, जिनके साथ कभी रात-दिन का उठना-बैठना था। उस मुहल्ले में हमारी टोली आपसी निकटता और प्रेमभाव के लिए मशहूर थी। और सचमुच हमारे आपसी सम्बन्ध ऐसे थे, जो किसी अच्छे परिवार में भी शायद ही देखने को मिलें। जैसा कि अक्सर होता है, चर्चा में पुराने दिनों की यादें ताजी की जाने लगीं। रामनिवास ने चर्चा छेड़ दी लल्लन के परिवार की। हम सबमें लल्लन का परिवार उस समय सबसे अधिक समझदार, सम्पन्न, और सभ्य माना जाता था। परिवार के सभी लोग पढ़े-लिखे थे, सभी भाइयों में रामलखन-सा प्रेम था, उनके पारिवारिक सम्बन्धों को और भाइयों के आपसी प्रेम को देखकर यह बात झूठी मालूम पड़ने लगती थी कि कलि-काल में भाई-भाई का पट्टीदार है, और उनमें हक के लिए आज नहीं तो कल लड़ाई होने ही वाली है। सभी कमाते थे, सबमें सुमति और एकता थी तो लक्ष्मीजी भी खुले दिल से आशीर्वाद देती थीं, और सम्पत्ति दिन-दूनी रात-चौगुनी की रफ्तार से बढ़ती जाती थी।

बीच में एक बार उड़ती-फिरती खबर मिली थी कि लल्लन के परिवार में बँटवारा हो गया। कानों से सुनी बात पर भरोसा नहीं हुआ था और इसे झूठी अफवाह मानकर दिमाग से निकाल दिया था, लेकिन आज जब कई लोगों के मुँह से यह बात सुनी तो दिल में गहरी चोट-सी लगी। रामनिवास ने बताया कि आज-कल सभी भाई बहुत ही तबाही की हालत में हैं। शिवमूरत ने इस पर अपनी राय जाहिर करते हुए बात आगे बढ़ायी, "भइया, सुखी परिवार और खुशहाल गाँव का जमाना गया। अब तो न कहीं कोई परिवार दिखाई देता है, और न गाँव। पहले तो गाँव छोटे-बड़े परिवारों का एक बड़ा कुनबा था, आज तो गाँव तेजी से टूटते और कलह की आग में जलते लोगों का अड्डा भर रह गया है। भाई तो भाई का दुश्मन बन ही गया है, जवान और कमाऊ बेटों और उनके बूढ़े माँ-बाप के भी सम्बन्धों को देखकर रोना आता है। माँ-बाप ने आस लगाकर बेटे को पाला-पोसा था कि बुढ़ापे को सहारा मिलेगा, लेकिन बेटे को अपने बीबी-बच्चों से फुरसत ही नहीं मिलती कि माँ-बाप की ओर ताकें। इसलिए आज गाँवों में आधे से भी अधिक बूढ़ों की संख्या ऐसी हो गयी है, जो रोज सुबह-शाम प्रार्थना करते हैं, 'भगवान, अब जल्दी से वापस बुला लो!' जाना तो सबको है किसी-न किसी दिन, लेकिन इस तरह, जिन्दगी से ऊबकर जाने की प्रार्थना करनी पड़े तो इसमें परिवार और गाँव का कौनसा रूप सामने आता है?"

इसमें कोई शक नहीं कि अब भारत के पुराने-से-पुराने गाँवों में भी फूट की दरारें पड़ गयी हैं, और जीवन में कोई एकता नहीं रह गयी है। लेकिन ऐसा क्यों है? क्यों भाई, चाचा, काका, दादा, भाभी, चाची, काकी, दीदी वाले बड़े-बड़े परिवार पति-पत्नी तक सिकुड़ गये हैं, और शायद इनमें भी सिकुड़न की यह क्रिया जारी है, तभी तो पति-पत्नी भी बाहरी-भीतरी कलह की आग में झुलसती जिन्दगी का बोझा किसी तरह ढोते जाते हैं, उनके जीवन में कोई रौनक नहीं दिखाई देती!

अपने देश के अज्ञान, अभाव और तरह-तरह के अन्याय में पिसते गाँवों और परिवारों की यह हालत है, लेकिन दुनिया के सबसे धनी, पढ़े-लिखे और सभ्य देशों के परिवारों और उनके समुदायों की क्या हालत है?

दुनिया के अमीर, सभ्य कहे जानेवाले इज्जतदार देशों में अमेरिका, रूस, ब्रितानिया, आस्ट्रेलिया आदि की गिनती सबसे ऊपर के देशों में की जाती है। इन देशों के बड़े-बड़े महानगर दुनिया के लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचते रहते हैं, और उन्हें जीवन को सुखी करने की नयी-नयी दिशाएँ दिखाते रहते हैं। दुनिया का हर पढ़ा-लिखा आदमी इन नगरों की ओर ताकता रहता है कि कोई नयी चीज मिले जिन्दगी को सुखी बनाने की। और, प्रायः हर देश की अनपढ़ जनता अपने देश के इन पढ़े-लिखे लोगों का मुँह ताकती रहती है कि वे संकट से उबरने का कोई रास्ता सुझायें। इसीलिए कुल मिलाकर आज मनुष्य की जिन्दगी को आकार देनेवाले इन बड़े देशों के महानगर ही माने जा सकते हैं। लेकिन इन महानगरों की क्या स्थिति है?

आस्ट्रेलिया से प्रकाशित एक अंग्रेजी पत्रिका 'दी प्लेन ट्रूथ' ने अपनी एक रिपोर्ट में ट्रू आँख खोल देनेवाली जान-कारियाँ जनवरी '६९ के अंक में प्रकाशित की है। हम जानते हैं कि स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों के आधार पर परिवार की इकाई बनती है, और परिवार की इन इकाइयों के आधार पर समुदाय और समाज बनते हैं। हम यह भी जानते हैं कि व्यक्ति→

www.vinoba.in

अम्बर चरखे का चमत्कार

मैं एक रोज सकुनपुरा की ग्रामस्वराज्य-सभा की बैठक में सम्मिलित हुआ। गाँव के लोगों ने ग्रामदान-पद्धति द्वारा संगठन बनाने के बाद अन्य गाँवों की तरह ग्रामकोष इकट्ठा करने का निश्चय किया। यह क्षेत्र कोड़र, आठवाँव या लंकापुरी के नाम से मशहूर है, क्योंकि तीन तरफ दह (पानी) से बारहों महीने घिरा रहता है। सरकारी अधिकारी तथा नेता लोगों को जहाँ जाना मुश्किल है वहीं पर ग्रामदान के लोग जाकर ग्राम-संगठन का कार्य बड़े तेजी से करा रहे हैं।

सकुनपुरा के बाद मैं मल्हौवा गांधी आश्रम के केन्द्र पर पहुँचा। उसी समय बारिस होने लगी। गांधी आश्रम मल्हौवा में साधारण पोशाक पहने १० वर्ष का एक लड़का प्रसन्न मुद्रा में बैठा था। मैंने लड़के का परिचय पूछा तो गांधी आश्रम के व्यवस्थापकजी ने बताया कि यह लड़का प्रतिमाह दो सौ रुपया अम्बर चरखे द्वारा कमा लेता है। यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मेरे मन में लड़के के पिता से मिलने की इच्छा हुई। व्यवस्थापकजी ने बताया कि आज रात को उसके यहाँ सहभोज है। वह सत्यनारायण की कथा सुनकर अपने परिश्रम के पैसे में से दो सौ रुपये गरीब लोगों के खिलाने में खर्च कर चुका है।

मैं मल्हौवा से पनिचा गया। पनिचा से सूर्यपुरा जाना था, जो यहाँ से ५ मील दूर था। वहाँ रात में ग्रामसंगठन की मीटिंग थी। पनिचा से चलने पर रास्ते में एक गाँव पड़ा, जिसका नाम बड़ागाँव है। वहाँ सूत-खरीद के लिए गांधी आश्रम के एक भाई मौजूद थे। वे अकेले सूत खरीद रहे थे। एक आदमी सूत तौलने में उनकी मदद कर रहा था। मैंने उस आदमी का परिचय पूछा तो सूत खरीदनेवाले भाई हँसने लगे और कहने लगे कि वह वही भाई है, जिसका आप दर्शन करना चाहते हैं। मुझे बड़ी खुशी हुई।

मैंने उस भाई का परिचय पूछा। उसने बताया, "मेरा नाम विश्वनाथ है। मैं चुरकैण्ट ग्राम का रहनेवाला हूँ। मेरे घर मेरी स्त्री, दो लड़कियाँ तथा एक लड़का है। मैं पहले बहुत गरीब था, क्योंकि मेरे पास केवल १० कट्ठा ही जमीन है। उसी पर कठिन परिश्रम करके जीविकोपार्जन कर रहा था। कुछ माह पूर्व मेरे गाँव में अम्बर मास्टर अम्बर चरखा सिखाने के लिए आये। मेरी स्त्री ने चरखे का शिक्षण लिया। प्रशिक्षण होने पर वह घर पर ही खाली समय में चरखा चलाने लगी। मैं भी उसकी मदद करने लगा। इस प्रकार मुझे भी चरखे की कुछ जानकारी हो गयी। चरखे के बारे में गांधीजी का विचार भी ग्रामदान के कार्यकर्ता लोगों से मालूम हुआ। मेरा उत्साह बढ़ा। मैं इस कार्य में ज्यादा समय देने लगा। घर का काम करने के पश्चात् दोनों प्राणियों में से जब जो खाली रहता है वह चरखा चलाने लगता है, यानी मेरा चरखा प्रायः चलता रहता है।

"मैंने सात माह में ८०० रुपये खेत में, २०० रुपया गरीबों को खिलाने में, २२५ रुपये कपड़े में तथा शेष घर के अन्य कार्य में खर्च किये। समय मिलने पर व्यवस्थापकजी को भी सहयोग दे देता हूँ। कभी-कभी गाँव में नमक, मसाला आदि लेकर फेरी भी करता हूँ।"

उसकी इन बातों को सुनकर वहाँ परे मौजूद अन्य लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। एक भाई जो थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा जान पड़ता था, कहने लगा कि जिस रोज प्रत्येक घर में चरखा चलने लगे, उस रोज से ही ग्रामस्वराज्य की ओर कदम उठ जाय। यही तो गांधीजी के स्वप्न को पूरा करने का एक-मात्र साधन है।

—रामसुन्दर भाई

→और समाज को सुखी-समृद्ध करने के लिए उसकी भौतिक जरूरतें पूरी करनी होती हैं, और विज्ञान उसके लिए चमत्कारी मदद कर रहा है। दुनिया के ये बड़े देश, और इन देशों के ये महानगर विज्ञान की अद्भुत शक्ति के अड्डे हैं, और यहाँ वैभव का कोई पारावार नहीं। लेकिन क्या वहाँ के आदमी सुखी हैं? सन्तुष्ट हैं? उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन साफ-सुथरा है? (क्रमशः)

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे
सम्पादक : राममूर्ति : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

www.vinoba.in